राजलदेसर, 29 जनवरी। धन का उपयोग सद्कार्यों हेतु, समाज उपयोगी हेतु हो तो उस धन का महत्व है। धनवान के विषय में तीन बातें विशेष रूप से है। धन–सम्पति है तो अहंकार मत करो, धन के प्रति ज्यादा आसक्ति मत रखो, धन का दुरूपयोग मत करो। ये उद्गार आचार्य श्री महाश्रमण ने 147वें मर्यादा महोत्सव के प्रवास काल में प्रतिदिन के प्रवचन में व्यक्त किए।

उन्होंने कहा– ''जिस में अतीत के प्रति चिन्तन नहीं, भविष्य के प्रति कोई विचार नहीं और वर्तमान से कोई राग–द्वेष नहीं उसका जीवन मुक्त जीवन है। आशा–लालसा जिनकी खत्म हो जाए उसे मोक्ष प्राप्त होता है। जब साधक रति और अरति से मुक्त हो जाता है, आकर्षण–अनाकर्षण के प्रति सम रहता है, मोह–माया के जाल से मुक्त रहता है तो उनका जीवन सफल जीवन है। अप्रस्त राग तो त्याज्य होता ही है, प्रस्त राग भी आखिर जाकर त्याज्य होता है। मोह करना आखिर एक कमजोरी है।

आज आचार्य महाप्रज्ञ की मासिक पुण्यतिथि पर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए अनेक अवदानों को याद किया गया।

इससे पूर्व मुनि सुमेरमलजी (लाडनूं) ने प्रवचन में कहा – तेरापंथ वीतराग धर्म है, यह वीतराग दर्शन को लेकर चलता है। इस धर्मसंघ में सेवा की महत्ता विशेष रूप से है। शरीर नाशवान है, फिर भी उनकी सेवा इसलिए करते हैं कि उनमें संकल्प–विकल्प न उठें। उनको चित्त समाधि मिले। कार्यक्रम में मुनि विकास कुमार, मुनि देवेन्द्र कुमार, मुनि जितेन्द्र कमार, गुलाब देवी बैद ने भी अपने विचार प्रकट किए।

मुनि विकास कुमार जो राजलदेसर के ही है। वे मुनि हीरालालजी स्वामी जिनका गत दिनों सुजानगढ में महाप्रयाण हो गया था की सेवा में नियुक्त थे। उन्होंने मारवाड़ी भाषा में कविता के माध्यम से गुरुदर्शनों से मिली प्रसन्नता को व्यक्त किया।

इस अवसर पर मुनि जितेन्द्र कुमार ने आगम मनीषी मुनि दुल्हराज द्वारा गुजराती से हिन्दी अनुवाद उपन्यास 'वीर विक्रमादित्य' तथा गुलाब देवी बैद ने अपनी कृति 'चलते–चलते' आचार्य प्रवर को भेंट की। मुनि जितेन्द्र कुमार ने कहा यह उपन्यास मुनि दुल्हराजजी के महाप्रयाण से पूर्व ही आ चुका था और स्वयं मुनिश्री ने इस उपन्यास को देख लिया था परन्तु उपन्यास का विमोचन उनके सामने नहीं हो पाया। इस पर गुरुदेव ने फरमाया– ''मुनि जितेन्द्र मुनि श्री दुल्हराजजी के सान्निध्य में काफी रहे हैं, वे उनके द्वारा सम्पादित होने वाले कार्यों में अपना श्रम नियोजित किया है। अब उनके काम को और आगे बढाते रहें, मंगल–कामना''। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

राजलदेसर, 29 जनवरी। ऊमचन्द बैद परिवार द्वारा नवनिर्मित्त तेरापंथ भवन का लोकार्पण प्रातः 8:51 बजे आचार्य श्री महाश्रमण के साान्निध्य में परिसम्पन्न हुआ। आचार्य प्रवर के पधारने पर ऊमचन्द बैद परिवार की तरफ से गुरुदेव का स्वागत किया गया और पूज्य प्रवर से निवेदन किया गया कि भवन का उपयोग सेवा केन्द्र के रूप में किया जाना लाभदायक सिद्ध होगा।

इस अवसर पर कुलदीप बैद ने कहा कि श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा की भूमि पर भवन बनाकर समाज को समर्पित करने की जिम्मेदारी ऊमचन्द बैद परिवार को सौंपी गयी, उसके प्रति पूरे समाज का ऊमचन्द बैद परिवार की ओर आभार प्रकट करता हूँ।

भवन में कुल 14 कमरे व दो बड़े हॉल जो पूर्ण साज–सज्जायुक्त हैं, बनाएं गए हैं। इस अवसर पर आचार्य श्री महाश्रमण ने कहा – जहाँ मंजिल हो वहाँ घर बनाना चाहिए। मकान की सभी को अपेक्षा रहती है। आवश्यकता एवं महत्व को ध्यान रखते हुए उन्होंने फरमाया एक अकेला व्यक्ति अपने को गौण करके परिवार को प्रमुख स्थान देता है, परिवार और समाज की बात आती है तो समाज महत्वपूर्ण होता है, समाज और राष्ट्र की बात आए वहाँ राष्ट्र बड़ा होता है और जहाँ आत्मा के हित की, उसके कल्याण की बात आए वहाँ आत्मा बड़ी होती है।

उन्होंने कहा – साधु–साध्वियों के निमित्त भवन न बनें वह समाज के लिए बनें और समाज के लिए काम आए। अपना असली घर अपनी आत्मा है, आत्मा को इतना पवित्र बना लें ताकि हम रह सकें तभी प्रभुत्व की प्राप्ति हो सकेगी। इस अवसर पर गुरुदेव ने गीतिका की दो पंक्तियों ''अपने घर में आना होगा, तब ही प्रभु को पाना होगा'' का संगान किया। तेरापंथ भवन का अपना महत्व है, भवन में धार्मिक गतिविधियां भी चलनी चाहिए। सेवा केन्द्र के उपयोग के बारे में चिन्तन किया जा सकता है।

भवन निर्माता ऊमचन्द बैद परिवार एवं भवन निर्माण हेतु एक–तिहाई भूमि दान देन वाले जैसराज जैचन्दलाल बैद परिवार का श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष हुणतमल नाहर व मंत्री नोरतनमल बैद ने अभिनन्दन पत्र भेंट कर सम्मान प्रकट किया। समारोह में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष हुणतमल नाहर व मंत्री नोरतनमल बैद तथा मांगीलाल बैद ने भी अपने विचार प्रकट किए। कार्यक्रम का संचालन दिलीप दुगड़ ने किया।

राजलदेसर, 30 जनवरी। जिस साधक के मन में ममत्व का भाव नहीं रहता, जो पूर्णतया समता में उपस्थित हो जाता है, वह मुनि होता है। सामान्य आदमी के ममत्व का भाव पैदा हो जाता है। उसके पदार्थ या व्यक्तियों के प्रति ममत्व के भाव पैदा हो जाते हैं। फिर भी प्रयास–अभ्यास के द्वारा इन्हें रोका जा सकता है। ये उद्‌गार आचार्य श्री महाश्रमण ने अध्यात्म समवसरण में प्रवचन के दौरान व्यक्त किए।

उन्होंने कहा – ''शिष्यों के प्रति भी ममत्व पैदा हो जाता है। ऐसे में साधना में कमी आ जाती है। आचार्य भिक्षु ने ममत्व को कम करने का प्रयास किया। उन्होंने साधक की साधना में ममत्व न आए, इसके लिए मर्यादाओं का निर्माण किया। संघ की अखण्डता का मूल कारण मर्यादाएं हैं''।

उन्होंने 'एक गुरु' के विधान की व्याख्या करते हुए फरमाया – आचार्य भिक्षु ने मर्यादा बनाई कि अपने–अपने शिष्य–शिष्याएं न बनाएं। यदि किसी कारणवश बनाना भी पड़े तो वे गुरु के ही माने जाएंगे। इस विषय में अपनी दीक्षा प्रसंग का स्मरण करते हुए उन्होंने फरमाया कि मेरे दीक्षादाता मुनि श्री सुमेरमलजी स्वामी हैं। परन्तु इन्होंने हमें गुरुदेव तुलसी को सौंप दिया। उस समय मुनि सुमेरमलजी स्वामी ने फरमाया – ''मैं तो गुरुदेव के निर्देश का पालन कर रहा हूँ''। उन्होंने कहा – ''जिसके मन में संतोष आ गया फिर उसके लिए सभी सम्पदाएं स्वतः उपलब्ध हैं। सन्तोष भी कहीं–कहीं पर उचित नहीं है, स्वाध्याय, जप, दान में सन्तोष नहीं करना चाहिए। ब्राह्मण को सन्तोषधारी होना चाहिए परन्तु राजा को सन्तोषी नहीं होना चाहिए। विकास की दिशा में निरन्तर आगे बढने का प्रयास करते रहना चाहिए''।

उन्होंने फरमाया –''प्रयास – अभ्यास के द्वारा मोह का अल्पीकरण किया जा सकता है। बिना मोह भाव कि भी कर्त्तव्य का निर्वाह किया जा सकता है। कर्त्तव्य में स्वस्वार्थ, स्वहित नहीं होना चाहिए, ऐसे में व्यक्ति कर्त्तव्य चित्त हो जाता हैं। अमोह, सन्तोष की साधना करते वाला अपने आप में सन्तुष्ट रहता है, उसे स्थित प्रदाता मिल जाती है।

आज श्रीगंगानगर से एक बड़ा संघ श्रीगंगानगर अंचल में गुरुवर के पधारने की अर्ज लेकर उपस्थित हुआ। इस पर गुरुदेव ने फरमाया गंगाशहर मर्यादा महोत्सव के पश्चात् देश–काल–भाव को ध्यान में रखते हुए श्रीगंगानगर अंचल के स्पर्श की घोषणा की। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

राजलदेसर, 30 जनवरी। जैन धर्म अहिंसा और अपरिग्रह जैसे अनोखे सिद्धान्तों पर आधारित होने के कारण करुणा, दया के साथ विसर्जन की भावना से ओतःप्रोत धर्मसंघ है। अतः यह जीव मात्र पर दया भाव रखने के सिद्धान्त पर बल देता है और अपरिग्रह के अनुसार विसर्जन की प्रवृति को सदैव बढावा देता है। फलतः तेरापंथ धर्म के अनुयायी समय–समय पर जनसेवार्थ हेतु विभिन्न कल्याणकारी कार्यक्रमों का आयोजन करते ही रहते हैं। फिर धर्मसंघ की विशिष्ट आयोजनों पर तो इनकी गंगा बहने लगती है।

इसी श्रृंखला में आचार्य श्री महाश्रमण के प्रथम एवं तेरापंथ धर्मसंघ के 147वें मर्यादा महोत्सव का महाकुम्भ अछुता कैसे रह सकता है। अतः इस पावन अवसर पर आचार्य श्री के दिनांक 24 जनवरी 2011 को मंगल प्रवेश से ही ऐसे ही कार्यक्रमों का शुभारम्भ हो चुका।

दिनांक 24 जनवरी से ही रतनगढ तहसील के विकलांगो की सहायतार्थ चिकित्सा दल पहुँच गया और दिनांक 25 जनवरी को उनकी जांच करके आवश्यकतानुसार पैरों की विकलांगता दूर करने के लिए विभिन्न प्रकार के साधनों का निर्माण किया गया एवं दिनांक 26 जनवरी गणतंत्र दिवस की पावन बेला में आचार्य श्री के सान्निध्य में 27 विकलांगों को कृत्रिम पैर, कैलिपर्स और बैशाखियों का वितरण किया गया। यह आयोजन अणुव्रत समिति के तत्वाधान में नीरा बैद फाउन्डेशन ट्रस्ट, जयपुर, राजलदेसर के सहयोग से आयोजित किया गया जिसमें भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति के डॉक्टरों द्वारा एवं डॉ. नरेश मेहता ने उल्लेखनीय सेवाएं प्रदान की।

दिनांक 29 जनवरी को इसी क्रम में दूसरा शिविर कैंसर जागरुकता एवं जांच निदान शिविर का आयोजन भी अणुव्रत समिति और महिला मण्डल के तत्वाधान में नीरा बैद फाउन्डेशन ट्रस्ट जयपुर, राजलदेसर के सहयोग से सम्पन्न हुआ। जिसमें भगवान महावीर कैंसर चिकित्सालय एवं अनुसंधान केन्द्र जयपुर के विभिन्न क्षेत्रों के दक्ष चिकित्सकों द्वारा सेवाएं प्रदान की गई जिसमें सर्जन, स्त्री रोग विशेषज्ञा, कैंसर रोग विशेषज्ञ नाक, कान, गला के विशेषज्ञों द्वारा 251 रोगियों की जाँच कर सामान्य दवाईयां और उचित मार्गदर्शन दिया गया।

साथ ही कानों से ऊंचा सुनने वालों को श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व. सुमेरमलजी कुण्डलिया की स्मृति में दिनांक 30 जनवरी को महात्मा गाँधी की पुण्यतिथि पर आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में 36 व्यक्तियों को श्रवण यन्त्रों का वितरण किया गया।

अध्यात्म समवसरण